aglasem.com

FOR MP CPCT EXAM PREPARATION

MP CPCT 2017 Question Paper · Hindi Typing

EXAM	YEAR	TYPE	SUBJECT	DATE
MP CPCT	2017	Question Paper	Hindi Typing	15 Jan 2017

SHIFT
Shift 1

Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Inscript 15th Jan 2017 Shift 1
Subject Name:	Inscript
Creation Date:	2017-01-15 13:41:55
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	97359747
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	97359755
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	97359755
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 973597197 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript

Actual

Group Number :	2
Group Id :	97359748
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Mandatory Break time:	No
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	97359756
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	97359756
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 973597198 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

किसी फिल्म के तथ्यों और इतिहास के मामले में अचूक होने की कितनी अपेक्षा की जा सकती है, फिर चाहे दावा किया गया हो कि यह वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। यह सवाल युवा निर्देशक राजा मेनन की नई फिल्म की सफलता से उठा है। निश्चित ही कुवैत और इराक से डेढ लाख से ज्यादा भारतीयों को वापस स्वदेश लाना उल्लेखनीय भारतीय उपलब्धि है और फिल्म बनाए जाने की हकदार है। युद्ध अचानक हुआ था और संकट की मार ज्यादातर निम्न मध्य वर्ग के श्रमिकों पर दिखी, इसलिए कुछ नाटकीयता जायज है। किंतु क्या इसे इतना मिथकीय बना दिया जाना चाहिए था। फिल्म में बताया गया है कि हर सरकारी एजेंसी ने प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा पर लापरवाही दिखाई। इसमें दूतावास भी शामिल है, जिसका स्टाफ या तो भाग खडा हुआ या (जैसा बगदाद में) उसने पूरी तरह कन्नी काट ली। विदेश मंत्री ने भी यह कह दिया कि सरकार अस्थिर है और कभी भी गिर सकती है और केवल नौकरशाही ही कुछ कर सकती है, जो स्थायी होती है। यदि भारत वहां फसे भारतीयों को वापस ला सका तो इसके पीछे सिर्फ दो लोग ही थे। इसमें एक तो बेशक हीरो अक्षय कुमार या रंजीत कतियाल था और दूसरे थे कोहली, विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव, जिनका कार्यालय क्लर्क से भी गया-बीता लगता है, जबकि संयुक्त सचिव बहुत ऊंचा पद है, किसी वरिष्ठ राजदूत के समकक्ष। कोई बात नहीं। फिल्में उस उबाऊ सरकारी व्यवस्था पर नहीं बनाई जाती, जो कभी-कभी काम करती है। उन्हें संकट, बेबसी, नाटकीयता और अच्छे-बुरे पात्र चाहिए होते हैं, जो मिलकर कहानी बनाते हैं। केवल बॉलीवुड ही काल्पनिक नाटकीयता पैदा करने के लिए वास्तविक घटनाओं को नहीं भुलाता, हॉलीवुड तो और भी बडे पैमाने पर ऐसा करता है। हाल ही में चर्चित, 'एर्गो' और 'अमेरिकन स्नाइपर' इसके अच्छे उदाहरण हैं। पहले भी हमने देखा है कि कैसे कुछ सच्ची घटनाओं को लेकर सफलतापूर्वक भव्य कथाएं रची गई हैं। 'बॉर्डर' इसका एक और उदाहरण है, जिसे 1971 के युद्ध के दौरान लोंगेवाला में हुई जंग पर आधारित माना जाता है। वह बेशक उस युद्ध के इतिहास में उल्लेखनीय अध्याय है, लेकिन उसमें वैसा कुछ नहीं था, जो परदे पर दिखाया गया, कम से कम जमीन पर तो नहीं। लोंगेवाला चौकी पर तैनात भारतीय सैनिकों के छोटे-से दस्ते ने मैजर कुलदीप सिंह चांदपुरी के नेतृत्व में मुख्यालय को पाकिस्तानी टैंक हमले की सूचना देने बाद वहां डटे रहकर हमलावरों को यह अहसास कराया कि उनकी संख्या बहुत ज्यादा है।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard